“हृदय” एक ऐसा शब्द है जो संदर्भ के अनुसार मनुष्य की आत्मा या आत्मिक जीवन को दर्शा सकता है।

सामान्यतः हमारे पास ऐसी कोई सटीक भाषा नहीं है जिससे हम किसी व्यक्ति की आत्मा या आत्मिक स्वभाव को पूरी तरह चित्रित कर सकें – कि वह कैसी दिखती है, कैसी महसूस होती है या वह कैसे कार्य करती है। इसलिए इन अदृश्य बातों को समझाने के लिए सरल भाषा में हम “हृदय” शब्द का प्रयोग करते हैं।

जैसे हम यह नहीं बता सकते कि परमेश्वर की शक्ति या सामर्थ्य का रूप, रंग या कार्यशैली क्या है – इसलिए हम प्रायः कहते हैं, “परमेश्वर का हाथ ने यह कार्य किया।” इसका अर्थ होता है कि परमेश्वर की सामर्थ्य या शक्ति ने यह काम किया। यहाँ हमने एक भौतिक अंग (हाथ) का प्रयोग एक आत्मिक और अदृश्य सत्य को व्यक्त करने के लिए किया है – ताकि वह अधिक समझने योग्य बन सके।

हालाँकि हम हर बार परमेश्वर की सामर्थ्य को “उसके हाथ” से नहीं दर्शाते, लेकिन जब हम ऐसा करते हैं, तब भी हम गलत नहीं होते।

अब सवाल है कि हम “हाथ” शब्द का ही प्रयोग क्यों करते हैं – किसी

और अंग का क्यों नहीं? इसका कारण है: हाथ ही वह अंग है जिससे हम कार्य करते हैं, निर्णय लेते हैं, हस्ताक्षर करते हैं और अधिकार को दर्शाते हैं। इसीलिए हाथ शक्ति और अधिकार का प्रतीक बन गया है।

ठीक उसी तरह, आत्मा या जीव की अदृश्य स्थिति को दर्शाने के लिए एक सरल शब्द की आवश्यकता थी – और वह बना “हृदय”। उदाहरण के लिए: “मेरी आत्मा बहुत दुखी है” के स्थान पर हम कहते हैं, “मेरा हृदय बहुत दुखी है।”
या फिर “मेरी आत्मा पीड़ित है” के बजाय “मेरा हृदय पीड़ित है।” – अर्थ वही है।

तो फिर प्रश्न उठता है: हम “हृदय” का ही प्रयोग क्यों करते हैं – कोई अन्य अंग क्यों नहीं, जैसे “गुर्दा”?

क्योंकि हृदय ही वह अंग है जो हमारे पूरे शरीर में रक्त का संचार करता है और सबसे पहले भावनात्मक परिवर्तनों का उत्तर देता है। जब हमें कोई झटका लगता है, तो हृदय की धड़कनें तेज हो जाती हैं। शांति की स्थिति में वे धीमी हो जाती हैं। पर क्या आपने कभी सुना है कि किसी को सदमा लगे और उसका जिगर या गुर्दा प्रतिक्रिया दे? नहीं!
हृदय एक ऐसा अंग है जो शरीर के भीतर होकर भी बाहरी परिस्थितियों को आत्मसात करता है – जैसे कोई दूसरा व्यक्ति हमारे भीतर रह रहा

हो।

इस अनूठे गुण के कारण हृदय को आत्मा या मनुष्य के अंदर के जीव का प्रतीक माना गया है।

इसलिए जब भी बाइबल में “हृदय” शब्द आता है, तो समझ लीजिए कि यह आत्मा या जीव को दर्शा रहा है।
यदि आप शरीर, आत्मा और आत्मा के बीच के अंतर को विस्तार से जानना चाहते हैं, तो यह लेख पढ़ें: >> शरीर, आत्मा और आत्मा का अंतर

क्या आपने यीशु को स्वीकार किया है?

क्या आपने प्रभु अपने परमेश्वर से अपने संपूर्ण हृदय और संपूर्ण सामर्थ्य से प्रेम किया है? या अभी भी संसार और इसकी अभिलाषाओं की सेवा कर रहे हैं? याद रखिए, बाइबल कहती है:

मत्ती 6:21

“क्योंकि जहाँ तेरा धन है, वहीं तेरा मन भी लगा रहेगा।”

आपका हृदय आज कहाँ है? यदि वह प्रभु के साथ है, तो यह बहुत उत्तम

है। लेकिन यदि वह संसार और उसकी वैभव-प्रियताओं में है, तो स्मरण रखिए:

याकूब 4:4

“हे व्यभिचारिणियो, क्या तुम नहीं जानते कि संसार से
मित्रता करना परमेश्वर से बैर रखना है? जो कोई संसार से मित्रता करना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का शत्रु ठहराता है।”

सिर्फ़ संसार से प्रेम करना ही आपको परमेश्वर का शत्रु बना देता है – आपको यह कहने की भी आवश्यकता नहीं कि आप परमेश्वर के विरोधी हैं।
यदि आपको फैशन से प्रेम है, या आप अंग प्रदर्शन वाले वस्त्र पहनना पसंद करते हैं, या सांसारिक चलचित्रों और धारावाहिकों के प्रेमी हैं, या खेलों के समर्थक हैं – तो जान लीजिए, आपने स्वयं को परमेश्वर का शत्रु बना लिया है।

और परमेश्वर के सभी शत्रुओं का अंजाम होगा – आग की झील में।

लूका 19:27

“परन्तु मेरे उन शत्रुओं को, जो यह नहीं चाहते थे कि मैं उन
पर राज्य करूं, यहाँ लाओ, और उन्हें मेरे साम्हने घात करो।”

आज अनुग्रह का द्वार खुला है!

यदि आप आज प्रभु यीशु को अपने जीवन में स्वीकार करना चाहते हैं, तो यही समय है। अनुग्रह का द्वार अभी खुला है – लेकिन वह सदा खुला नहीं रहेगा।
एक दिन यह द्वार बंद हो जाएगा – यहीं पृथ्वी पर, और उस दिन को कहा जाता है: कलीसिया का उठा लिया जाना (Unyakuo / The Rapture)।

उसके बाद पृथ्वी पर केवल महाकष्ट (महान क्लेश) रहेगा, और फिर सात कटोरों का न्याय आएगा – जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 16 में पढ़ते हैं। उस समय यह पृथ्वी बिल्कुल असुरक्षित स्थान बन जाएगी।

इसलिए यदि आप यीशु को आज अपने जीवन में ग्रहण करना चाहते हैं, तो एक शांत स्थान चुनें, और थोड़ी देर के लिए अकेले हो जाएँ। फिर अपने पापों को सच्चे हृदय से स्वीकार करें, उनका अंगीकार करें, और उनसे सच्चे मन से पश्चाताप करें।

इसके बाद उन सभी सांसारिक आदतों को त्याग दीजिए जो आपके जीवन

□□□ □□□ – □□□□ □□ □□□□□□ □□□, □□□□□□□ □□□, □□□-□□□ □□ – □□ □□□□ □□ □□□ □□□, □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□:

> □□□□□□□□□ □□ □□□ *2:38*
>
> “□□ □□□□ □□ □□□□ □□□, □□ □□□□□; □□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□; □□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□”

□□□□□ □□□□ □□□□ □□!

□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□

□□□□□□□□□ / □□□□□□ □□□ / □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□:

□ +255693036618 □□ +255789001312

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp